एसफोर्ड ध्येययात्रा : मेरा मार्गदर्शन

एसफोर्ड संस्थान से जुड़े कुछ उत्साही युवजन-गुरुजन के आशीर्वाद से ग्रामीण विकास को नई दिशा देने हेतु जोधपुर नगर से 27 किलोमीटर दूर लूणी तहसील के पीशावास गाँव की ढाणियों के बीच जाकर जमे हैं। अपने कार्य के बल पर प्राप्त धन सहयोग से छोटे-छोटे, किन्तु उपयुक्त कुछ भवनों का निर्माण कराया है जहाँ उनके साथ आसपास की ढाणियों के कुछ विद्यार्थी बालक भी, किसी रिहायशी स्कूल की तरह नहीं, बल्कि एक आश्रम की तरह दीप-से-दीप प्रज्वलित करते रह रहे हैं। गोमाता के सेवार्थ गोशाला भी शुरू की गई है। यह सब अपने आप में एक अत्युत्तम प्रयास है।

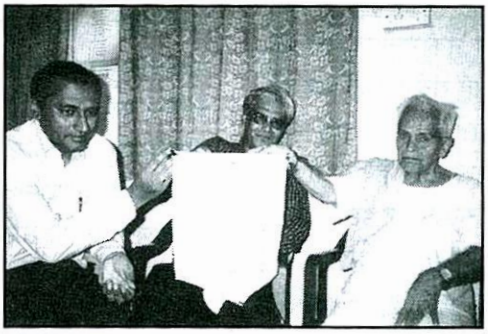

गाँवों के भौतिक विकास की अपेक्षा चारित्रिक एवं बौद्धिक विकास अधिक महत्त्वपूर्ण है। कहने को तो हम बार-बार बुद्धिमानी के भाव से कह देते हैं कि धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया, यदि चरित्र गया तो सबकुछ लुट गया, परन्तु जीवन में इसे चरितार्थ करना बहुत ज़रूरी है। इस विकास हेतु हमारा चिन्तन तथा आचरण पोंगापन्थी रूढ़िसम्मत न होकर बुद्धि, विज्ञान एवं विवेकसम्मत होना चाहिए। मेरी राय में इस संस्थान के नाम से 'रेशनल' शब्द का होना यही जताता है। इसकी पराकाष्ठा हमारे वेद-शास्त्र बताते हैं।

सम्पन्न-सम्भ्रान्त परिवारों से उभरे ये युवजन उच्चशिक्षाप्राप्त और अन्य समकक्ष शहरी युवाओं की भाँति धन कमाने के योग्य होते हुए भी शहरी सुख-सुविधाओं से हटकर नाममात्र के मानदेय पर ग्रामीण क्षेत्र में ग़रीबी गुजर कर रहे हैं। 'तप' की मेरी परिभाषा है- गरीबों से जुड़े रहकर स्वयं को उनकी पहचान में शुमार करते हुए उन जैसा ग़रीबी गुजर करना। तप एवं अपरिग्रह और त्याग एवं बलिदान का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। तप से ही हम त्यागी, बलिदानी बनते हैं। सुख-सुविधाभोग हमें स्वार्थी बनाता है।

आज प्राय: लोग सुख-सुविधाभोगी हो गये हैं और स्वार्थवृत्ति ही सभी बुराइयों का मूल है। स्वार्थसिद्धि एवं देह के क्षणभंगुर तथाकथित सुख की कामना यानी फानी नफ़शानी हवश में हम खोटे-से-खोटे काम करने में हिचकते नहीं। जीवन के हर क्षेत्र में क्या-क्या पाप किये जा रहे हैं, हम जानते हैं, उन्हें गिनाने में लेखनी भी शरमाती है। समाज को दिशा देने वाले मुखौटेधारी भी अधिक पीछे नहीं है। इसीलिए समाज का पतन हो रहा है। भावी पीढ़ी को वरसे में क्या हम यह दे जाना चाहेंगे ? ऐसा करना भलेमानसों को शोभा नहीं देता। समाज का उत्थान स्वयं हमारे द्वारा ही होना आवश्यक है और यह हमारे तप एवं त्याग के बल पर ही होना है।

शुक्र है प्रभु का कि इस पावन भारतभूमि पर साधारणजन त्यागी-तपस्वी पुरुषों के प्रति आज भी गहरी श्रद्धा और आस्था रखते हैं। जब त्याग का मात्र भेष धारण करनेवाले ही पूजे जाते हैं, तब इन युवकों का पारदर्शी, पूरा समय आँखों के समक्ष बीतनेवाला शुद्ध जीवन बेअसर नहीं हो सकता। इनका तपोमय जीवन ग्रामवासियों के सोच एवं जीवन को अवश्य बदलेगा। कम-से-कम नई पीढ़ी तो प्रभावित होगी ही। तप और त्याग के फलस्वरूप इस हाड़-मांस के शरीर के भीतर का सूक्ष्म शरीरसमूह चेतन और प्रकाशमान् हो जाता है। इस दीप्ति का कारण हमारे इर्दगिर्द आँखों का सृजन होता है जिसका धवलपन आसपास के वातावरण को प्रकाशित करता है। इसी कारण

मनुष्यों के लिए तो माता अवश्य ही देवताओं की भी देवता है।

-भास

सौजन्य : श्री रमेश व्यास, प्रबन्धक, रजनीश ग्रुप ऑफ कम्पनीज, दुबई

दीप-से-दीप जले कहा जाता है। लोगों की अन्तरात्मा में संवेदन और श्रद्धा का सृजन होता है वे ज्ञान-विज्ञान की ओर उन्मुख होते हैं ओर सभी मिलकर यज्ञकर्म अर्थात् शुभ अनुष्ठानों में जुट जाते हैं और उनके संकल्प फलीभूत होने लगते हैं। प्रभुकृपा से अपने आप सिद्ध होने लगते हैं। बस यहीं एक खतरा उत्पन्न होना सम्भव है।

सूक्ष्म शरीर की रचना, स्थूल भूतों की बजाय सूक्ष्म तत्त्वों से हुई है जिनमें प्रथम महत् है। अहंकार उसका एक अंग है। इसका सरल अर्थ है 'मैं हूँ, मैं कुछ हूँ', यानी मेरा अस्तित्व है, यदि ऐसा नहीं होता तो उसके होने का प्रयोग ही क्यों था? सूक्ष्म शरीर के उत्कृष्ट क्रियाकलापों (कलाओं) से पुरुष के होने का प्रयोजन है। अहंकार का यह सकारात्मक पक्ष है।' प्रभुकृपा को भूलकर स्वयं का कर्ताभाव उत्पन्न होना अहंकार का नकारात्मक पक्ष है। बावलेपन में समझने लगते हैं कि यह सब हम ही कर रहे होते हैं और उतावले अलग हो जाते हैं। बस, यह भाव जगते ही आभा बुझ जाती है। हमारा पतन हो जाता है। हमने यदि ध्यान नहीं रखा तो सारा गुड़ गोबर हो जायगा। अत: हमें सदैव स्वाध्यायशील रहना चाहिए। स्वयं अध्ययन-आत्मविश्लेषण निरन्तर करते रहना चाहिए और मार्गदर्शन के लिए श्रुति का श्रवण यानी वेदशास्त्र का अध्ययन भी करते रहना चाहिए। यह भी तप है। तप से ही श्रुति को चरितार्थ करना सम्भव है। वेद का मात्र भार उठाये फिरना निरर्थक है, बेकार है।

अत: ऋषि-मुनियों ने ईश्वरप्रणिधान, तप और स्वाध्याय को क्रियाभोग की संज्ञा दी है। ईश्वर-समर्पण, सब उसको ही अर्पण, उसी की शरण का भाव सदा बना रहना चाहिए। सत्य के विद्वान्, बुद्धिमान् पथिक को सदा 'धीर' की संज्ञा दी है। उत्थान उतावलाई का काम नहीं, धैर्य का है।

ईश्वर की शरण को अरबी में 'इस्लाम' कहते हैं और शरणागत को 'मुस्लिम'। हजरत मोहम्मद साहब ने अपने को सदा अल्लाह का गुलाम माना है। इस्लाम का अर्थ शान्ति या सुलह भी है। इन अर्थों पर आज बल दिया जा रहा है; क्योंकि उलटी बातें और कृत्य हो रहे हैं। इस्लाम का सूफी दर्शन और हिन्दू दर्शन में कई समानताएँ हैं। सूफी दर्शन ऊपर वर्णित भावों तप (ग़रीबीगुजर) को फ़कीरी, शरणागति को बन्दगी, धैर्य को सबूरी, प्रभु के प्रति कर्त्तव्य भाव को शुकूरी कहा है। ईश्वर सत्य है, अत: उसे 'हक़' कहा है। ये सभी सूफी इस्लाम के अंग हैं। ईश्वर को प्राप्त सूफी सन्त अपने को 'अनलहक' (मैं हक़ हूँ) कहने लगता है। सूफी इस्लाम को नकारा नहीं जा सकता, यह अजमेर शरीफ के भव्य मेले से स्पष्ट है। इन दिनों मैं कुरआन शरीफ अध्ययन कर रहा हूँ, इस का सार भी कभी बताऊगा। इस्लाम की एक उत्तम बात है, कर्ताभाव कभी नहीं आना चाहिए। इसलिए सच्चा मुसलमान सदा 'इंशाअल्लाह' यानी 'ईश्वर ने चाहा तो कार्य हो जायगा' यह बात खासकर पीशावास के मुसलमान भाइयों की खातिर कही है। ऊपर भी इसी पर बल दिया है, तब ही हमारी साधना आगे चल सकती है।

हमारी साधना का उद्देश्य मात्र स्वयं की उन्नति या कल्याण नहीं है। समाज की उन्नति में ही हमारी उन्नति निहित है। इसी प्रकार समाज का उत्थान होना है। इसका स्वरूप त्याग और तप आधृत होना होगा। भारतवासी पुन: तपस्वी, त्यागी एवं बलिदानी बनें। भारत गाँवों में बसता है। अत: इस अनुष्ठान की शुरुआत गाँवों से करनी होगी। इसका अन्य व्यावहारिक कारण भी है। पाश्चात्य सभ्यता (बाजारी प्रपञ्च) एवं जीवनशैली का अन्धानुकरण (अन्धी नकल) बड़े शहरों से छोटे शहरों तक पहुँचने लगा है। गाँव अभी बचे हुए हैं; वे बचे रहने चाहिए। भारतीयता न मात्र सुरक्षित रहनी चहिए बल्कि पुन: चारों ओर फैलनी चाहिए। इस संस्थान से जुड़े महानुभावों का गाँवों से जुड़ने का यही क्षेत्र है, मैं ऐसा मानता हूँ। गाँवों को शहर बनाने का अभिप्राय कभी नहीं हो सकता, इसलिए ग्रामीण बालकों की शिक्षा का काम प्रथम है। किसी नेक आदमी ने सही कहा है कि अपराध की रोकथाम के लिए कानून भले ही आवश्यक हो परन्तु सद्गुणों का निर्माण

गौएँ संसार की सर्वश्रेष्ठ वस्तु हैं। वे जगत् को जीवन देने के कार्य में प्रवृत्त हुई हैं। भगवान शंकर सदा उनके साथ रहते हैं।
–महाभारत
सौजन्य : श्री एस.के. लोहरा, उपमहाप्रबन्धक, पंजाब नेशनल बैंक, जयपुर (राज.)

कानून के बल पर कदापि नहीं हो सकता। कानूनों से यह रोकथाम कहाँ हो रही है। कानून की पाबन्दी करनेवाले प्राय: भ्रष्ट हैं तथा पाबन्दी करनेवाले उससे बचने की कई गलियाँ बेईमानी से निकाल लेते हैं। अत: उसमें भी नैतिकता आवश्यक है। यह कार्य सत्ता सुखभोगी विधायक नहीं, तपस्वी शिक्षक ही कर सकेंगे।

नैतिक शिक्षा की शुरुआत बालकों से ही होगी। भारतीय नैतिक मूल्य, यम-नियम और धर्म, कोई मजहब न होकर मानवधर्म के लक्षण पर्यायवाची हैं। इनकी शिक्षा हमारे शुद्ध शास्त्र एवं इतिहास की सहायता से देनी होगी। हम इस स्वतन्त्रता को खो नहीं बैठें, चाहे अधिक श्रम एवं तप करना पड़े। अत्यधिक तप करने पर ही प्रभु आपके सहाय होकर सफलता प्रदान करेंगे। संस्थान के हित हेतु जो समझ में आया, वह ऊपर कह दिया है।

जो आपको अच्छा लगे, अवश्य आचरण में ग्रहण करें, यही प्रार्थना है।

मैं दिल से एसफोर्ड समूह को अपना मेहरबान वारिस मानता हूँ। मेरी ओर से यह मार्गदर्शन आपको सौंप निश्चित हूँ...!

मुक्तसंगोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वित:।
सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकार: कर्ता सात्त्विक उच्यते॥

One who performs his duty
liberated from all material association,
devoid of false ego.
with resolute will and great enthusiasm,
and is unmoved by success or failure,
he alone epitomises virtuous service.

✍ खेत लखानी

गीत :

बात करें प्यार की

आओ, कुछ बात करें प्यार की
फूलों की, कलियों की, भौंरों की, बगियों की
चाँद की, सितारों की, जादुई नज़ारों की
शीतल वातास की, गुलमुहर-अमलतास की
बात करें फागुनी बयार की।
आओ, कुछ बात करें प्यार की।।

गीतों की, मीतों की, यादों की, वादों की
साज़ों की, सरगम की, रातों की, शबनम की
नदियों की, निर्झर की, पत्रों के मर्मर की
बात करें सुर की, सितार की।
आओ, कुछ बात करें प्यार की।।

सावन की, मोर की, सतरंगे भोर की
शिशु की किलकारी की, केसर की क्यारी की
रूठने-मनाने की, दिल में उतर जाने की
बात करें किसी दिलदार की।
आओ, कुछ बात करें प्यार की।।

बहुत हो चुकीं बातें, दंगों-फसादों की
बहुत हो चुकीं बातें, बम के धमाकों की
तंगी-तनाव की, जख्मों की, घाव की
भूलें, अब बात करें यार की।
आओ, कुछ बात करें प्यार की।।

✍ **डॉ. अशोक प्रियदर्शी**
नीचे करम टोली, राँची
झारखण्ड-834008

गौएँ चन्द्रमा से निकले अमृत से उत्पन्न हुई हैं तथा शान्त, पवित्र, सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाली और जगत् को प्राणदान देने वाली हैं।
–महाभारत
सौजन्य : श्री सत्यनारायण पुरोहित, जिला रसद कार्यालय, जोधपुर